INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 5, May 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

"उदयपुर शहर में स्थित जैन एवं हिंदू मंदिरों की मूर्ति कला एवं स्थापत्य कला का तुलनात्मक अध्ययन"

Author

Shivani jain- Research Scholar, **Pacific Academy of Higher Education & Research University**, Udaipur, Rajasthan (India)
Mobile No. 7737039503

Under supervision

Dr. Basant Kashyap- Faculty of Social Science and Humanities, Pacific Academy of Higher Education & Research University, Udaipur, Rajasthan

सारांश- इस शोध पत्र के अंतर्गत उदयपुर में स्थित हिंदू एवं जैन मंदिरों की मूर्ति एवं स्थापत्य कला पर अध्ययन किया गया है। इसका मूल उद्देश्य दोनों धर्मो के मंदिरों में समानता एवं असमानता को जानना व दर्शाना है। इस शोध के अंतर्गत जैन एवं हिंदू धर्म के मंदिरों को लेने का कारण यह है कि, विश्व में प्रचलित विभिन्न धर्मों में से मात्र जैन एवं हिंदू धर्म के अनुयायी ही मंदिर को पूजा स्थल के रूप में मानते हैं। शोध पत्र में सर्वप्रथम उदयपुर में स्थित जैन एवं हिंदू मंदिरों की जानकारी दी गई है उसके पश्चात जैन एवं हिंदू मंदिरों की मूर्ति कला एवं स्थापत्य में समानता की विवेचना की गई है जिसमें मंदिरों के गर्भग्रह, बनावट एवं अलंकरणों को एकसा बताया है। इसके पश्चात दोनों धर्म के मंदिरों में असमानता की विवेचना की गई है। मंदिरों में असमानता दोनों धर्म की मान्यताओं पर आधारित है।

Key Words- जैन धर्म, हिंदू धर्म, स्थापत्य, मूर्ति कला

प्रस्तावना- भारत देश में कई धर्म एवं संस्कृतियों का वास है। इन सभी धर्मों में से जैन एवं हिंदू परम्परा भारत की मूल परम्पराएं मानी जाती है। दोनों ही धर्मों में मंदिर एवं मूर्ति पूजा को धार्मिक परम्परा का केंद्र माना जाता है, इसी के आधार पर इस शोध पत्र में जैन एवं हिंदू मंदिरों की मूर्ति कला एवं स्थापत्य की तुलना की गई है। शोध के अंतर्गत उदयपुर शहर के मंदिरों को लिया गया है क्योंकि यहां पर दोनों ही धर्म के मंदिरों की बहुलता है।

उदयपुर शहर का एक प्राचीनतम मंदिर आयड़ क्षेत्र में स्थित है, जो कि जैन धर्म के तीर्थंकरों को समर्पित है। इसी आयड़ क्षेत्र में एक ओर मंदिर स्थित है जो कि मीरा मंदिर के नाम से जाना जाता है एवं यह मंदिर हिंदू मान्यताओं पर आधारित एवं हिंदू देवी-देवताओं को समर्पित है। दोनों धर्मो का सहास्तित्व इस शोध के विषय का आधार बनता है।

शोध अध्ययन

जैन धर्म विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से एक है। वर्तमान समय में इस परंपरा/धर्म के प्रमुख प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ को माना जाता है। संपूर्ण भारत में जैन धर्म के मंदिर लगभग सभी स्थानों पर हैं, परंतु क्षेत्र विशेष एवं वहा की सामाजिक स्थिति के आधार पर उन मंदिरों का रखरखाव एवं प्रचलन प्रभावित हुआ है।

उदयपुर क्षेत्र में जैन समुदाय काफी विस्तृत है, इसी कारण यहां पर प्राचीन मंदिरों के साथ-साथ कई नए जैन मंदिरों का निर्माण भी हुआ है।

उदयपुर न केवल जैन मंदिर वरन यहां के हिंदू मंदिरों के लिए भी जाना जाता है, जिनमें श्री जगदीश मंदिर, जगत शिरोमणि मंदिर, आयड़ स्थित मीरा मंदिर आदि शामिल है एवं हिंदू मान्यता की संख्या अधिक होने के कारण यह मंदिर अत्यधिक प्रसिद्ध भी है।

इस शोध के अंतर्गत **"उदयपुर में स्थित जैन एवं हिंदू मंदिरों की मूर्ति कला एवं स्थापत्य कला का तुलनात्मक अध्ययन"** किया जाएगा। जो कि हमें विभिन्न रूपों में भारतीय मूर्तिकला को गहराई से समझने एवं अवलोकन करने में सहायता करता है।

- **जैन एवं हिंदू मंदिरों की मूर्ति कला एवं स्थापत्य कला में समानताएं-**

जैन एवं हिंदू मंदिरो में शैलिगत समानताएं देखी जा सकती है। जहां उनके ढांचे समान रूप से बनाए जाते हैं जिनमें मंडप, अर्धमंडप, गर्भग्रह, शिखर, ध्वज, कलश आदि दोनों ही प्रकार के मंदिरों में होते हैं।

जैन एवं हिंदू दोनों ही प्रकार के मंदिरों में एक ही प्रकार के पत्थर का प्रयोग किया गया है, जिसमें मुख्य रूप से लाल बलुआ व सफेद संगमरमर के पत्थर शामिल है। इन दोनों के निर्माण भी समान रूप से किए गए हैं, जिनमें एक ही पत्थर को काटकर एवं नक्काशी कर उसको निर्धारित आकृति प्रदान की जाती है।

दोनों ही प्रकार के मंदिरों में गर्भग्रह का निर्माण किया जाता है एवं मंदिर के मुख्य देवता एवं तीर्थंकर की मूर्तियों को गर्भग्रह में स्थापित किया जाता है। गर्भग्रह दोनों ही प्रकार के मंदिरों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है एवं इसमें सामान्य दर्शकों का प्रवेश निरोध होता है। गर्भग्रह की महत्ता को देखकर दोनों ही प्रकार के मंदिरों में इसके द्वार व देहरी को अत्यधिक सुंदर रूप से सजाया जाता है।

Figure 1 जैन व हिंदू मंदिर का गर्भगृह

जैन एवं हिंदू मंदिरों की मूर्ति कला में भी समानता देखी जाती है जिसमें दोनों ही मंदिरों में अलंकरण समान रूप से किया जाता है जिसमें फूल-पत्ती, लताएं, पशु-पक्षी आदि की छवियां/आकृतियां बनाई जाती है। उसके अलावा दोनों ही प्रकार के मंदिरों में देवताओं एवं अप्सराओं की मूर्तियां भी बनाई जाती है। दोनों ही प्रकार के मंदिरों में स्तंभों की भी महत्ता होती है जिनके कारण मंदिर की छत को सहारा मिलता है। यह स्तंभ दोनों ही प्रकार के मंदिरों में अत्यंत सुंदर रूप से नक्काशी कर सजाए जाते हैं।

- **जैन एवं हिंदू मंदिरों की मूर्ति कला एवं स्थापत्य कला में असमानताएं-**

जैन एवं हिंदू मंदिर मूर्ति कला में सबसे बड़ी असमानता उनका उद्देश्य है जिसके कारण से वह बनाई जाती है। हिंदू मूर्ति कला का उद्देश्य दर्शनार्थियों एवं भक्तों को देवी-देवताओं के विभिन्न रूपों एवं दिव्य गुणो से परिचित करवाना है व जैन मूर्ति कला का उद्देश्य तीर्थंकरों की छवियों को दर्शन होता है। हिंदू मूर्ति कला में देवी-देवताओं को अलग-अलग रूपों में उनके वाहन पर आरूढ एवं उनके आयुधों को धारण किए हुए दर्शाते हैं जिससे उनकी भव्यता दिखती है।

इसी के विपरीत जैन मूर्ति कला में तीर्थंकरों के सौम्य एवं शांत स्वरूप को ज्ञानस्त मुद्रा में दिखाया जाता है। उनकी पहचान के लिए उनके चिन्हो को उनकी प्रतिमा के नीचे की ओर अंकित किया जाता है एवं उनके केवली स्वरूप को दर्शाने के लिए उनके वक्ष स्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह अंकित किया जाता है। तीर्थंकरों की मूर्तियों को नग्न दिगंबर अवस्था में दिखाया जाता है। (श्वेतांबर परंपरा में तीर्थंकरों को विभिन्न आभूषणों से सजाया जाता है, परंतु दिगंबर परंपरा में तीर्थंकरों की मूर्तियों पर किसी प्रकार का आभूषण नहीं होते हैं।)

हिंदू मूर्ति कला में भावों का महत्वपूर्ण स्थान होता है जिनमें मूर्तियों में वीर रस, श्रृंगार, रौद्र एवं शांत रस दिखाया जाता है जैसे कि तांडव करते हुए भगवान शिव की प्रतिमा रौद्र रस का उदाहरण है, तीर कमान धारण किए हुए श्री राम की प्रतिमा वीर रस का उदाहरण है। इसी के विपरीत जैन मूर्ति कला में मुख्य रूप से शांत रस को दिखाया जाता है। तीर्थंकरों के चेहरे पर शांत भाव व सौम्यता की अभिव्यक्ति होती है।

जैन एवं हिंदू मूर्ति कला में एक प्रमुख असमानता मूर्तियों की मुद्राओं में देखे जा सकती है। हिंदू मूर्ती कला में देवी-देवताओं की मूर्तियों को विभिन्न मुद्राओं में जैसे कि पद्मासन, स्थानक, आरूढ, नृत्य मुद्रा, बांसुरी बजाते हुए, संहार करते हुए, हाथों में अस्त्र-शस्त्र धारण किए हुए एवं अन्य कई मुद्राओं में जैसे कि अभय, वरद, ज्ञानस्त, तर्जनी आदि में दिखाया जाता है। इसके विपरीत जैन मूर्तियों को केवल पद्मासन एवं खडगासन/स्थानक रूप में ध्यान मुद्रा में दर्शाया जाता है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 5, May 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

Figure 2 जैन मंदिर में स्थित तीर्थंकर प्रतिमाएं

Figure 3 हिंदू मंदिर के बाहर स्थित विभिन्न भगवान एवं देवी-देवताओं की प्रतिमाएं

जैन एवं हिंदू मूर्ति कला में असमानताएं मात्र मुख्य देवी-देवताओं और तीर्थंकरों की मूर्तियों तक सीमित नहीं है, परंतु इसे मंदिरों की सजावट में एवं उसके बाहरी ओर बनाई गई कलाकृतियों में भी देखा जा सकता है। हिंदू मंदिरों में युद्ध के दृश्य अत्यंत सामान्य है एवं सभी मंदिरों में देखने को मिलते हैं, जिसके अंतर्गत अश्वथर, गजथर, नरथर आदि बनाए जाते हैं, परंतु जैन मंदिर मूर्ति कला में इनका अभाव होता है।

Figure 4 जैन मंदिर की बाहरी दीवारों पर बनी मूर्ति कला

इनके अलावा जैन मूर्ति कला में सामाजिक जन-जीवन के दृश्यों का भी अभाव होता है जो कि हिंदू मूर्ति कला में विशेष स्थान प्राप्त करता है। इनका संबंध दोनों धर्म की अलग-अलग मान्यताओं से देखा जा सकता है जिसमें हिंदू धर्म चार पुरुषार्थों जैसे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष से परिचित कराता है, जबकि जैन धर्म की मान्यता में अंतरंग शांति की खोज करने एवं मोक्ष के मार्ग पर चलने पर बल दिया जाता है।

- **सारांश-**

जैन एवं हिंदू मूर्ति कला में कई प्रकार की समानताएं व असमानताएं देखी जाती है।
जैन एवं हिंदू दोनों ही मूर्ति की पूजा करने वाली संप्रदाय हैं, इसके अलावा दोनों की ही कई प्रकार की धार्मिक क्रियाएं एक समान होती है।
दोनों मंदिरों की मूर्ति कला में समानता का एक आधार यह भी है कि इन दोनों मंदिरों को प्राचीन काल से सामान कारीगरों एवं नक्काशी करने वाले कारीगरों द्वारा निर्मित किया जाता था, जिसके कारण इन मंदिरों के रंग-रूप एवं बनावट में समानताएं आ गई।
इन मंदिरों की मूर्ति कला में असमानता भी अत्यंत गहन है, जिसका कारण दोनों धर्म के मूलभूत सिद्धांतों की असमानता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Bhart ki Murtikala ki kahani, Pub. 2005 Rajpal & Son's (Bhagwatsharan Upadhyay)
2. भारतीय स्थापत्य एवं कला, Pub. मोतीलाल बनारसी दास प्राइवेट लिमिटेड (Dr. उदयनारायण उपाध्याय और प्रो. गौतम तिवारी)
3. प्राचीन भारतीय कला वास्तु कला और प्रतिमा विज्ञान, Pub. EduGorilla Publication, (रोहित मांगलिक)

4. जैन इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला, Pub. EduGorilla Publication, (रोहित मांगलिक)
5. जैन प्रतिमा विज्ञान, Pub. पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी (डॉ. मारुति नंदन प्रसाद तिवारी)
6. जैन कला एवं स्थापत्य, Pub. भारतीय ज्ञानपीठ (अमलानंद घोष)
7. देव शिल्प मंदिर वस्तु एवं स्थापत्य, Pub. नरेंद्र कुमार बड़जात्या, छिंदवाड़ा (प्रज्ञाश्रमण आचार्य श्री 108 देवनंदी जी महाराज)

Copyright & License:
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.